फलहोड़ी बड़ागाँव

विधान

रचयिता -

श्रमणाचार्य विभवसागर मुनि

कृति	:	फलहोड़ी बड़ागाँव विधान
आशीर्वाद	:	गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी महाराज
रचयिता	:	श्रमणाचार्य विभवसागर मुनि
प्रस्तुति	:	श्रमण शुद्धात्मसागर मुनि
संस्करण	:	प्रथम (सन् २०२२)
प्रतियाँ	:	५०००
मूल्य	:	स्वाध्याय
प्रकाशक	:	श्री १००८ दि.जैन सिद्धक्षेत्र फलहोड़ी बड़ागॉव (धासन) जिला-टीकमगढ़ (म.प्र.)
प्राप्ति स्थान	:	राकेश केशरिया, हटैया मेडिकोज, बड़ागॉव 9926891933
मुद्रक	:	विकास ऑफसेट, भोपाल- 9425005624

अविस्मरणीय वर्षायोग
सिद्धक्षेत्र फलहोड़ी बड़ागाँव धसान

भोपाल में बड़ागाँव से चतुर्मास हेतू कमेटी ने निवेदन करने समाज के महानुभव पधारे आ.श्री ने आशीर्वाद दिया सर्व संघ का मंगल विहार बड़ागाँव के लिए हो गया।

दिनांक 10.07.2022 को बड़े धूमधाम से सर्व संघ सहित आ.श्री ने प्रवेश किया प्रवेश के साथ ही पूरे गाँव में धर्म की लहर दौड़ उठी, चौका लगने लगे।

दिनांक 14.07.2022को उत्साह पूर्वक समाज ने कलश स्थपना की श्री गुरुवर के प्रवचन हुए समाज धर्म लाभ पाकर धन्य हुई।

मोक्ष सप्तमी को ब्र.छक्कीलाल त्यागी की छुल्लक दीक्षा बड़े भारी जन समूह के समक्ष हुई आराधक महानुभावों ने श्री गुरुवर के प्रवचन पाकर सुनकर अपने आपको धन्य माना। सभी हर्ष के साथ पुनः गुरुवर के दर्शन मिलें ऐसी भावना भाकर चलें गए नाम रखा क्षु.सफल सागर जी एवं दिनांक 19.08.2022 को ब्र.छोटेलाल जी सतभैया शाहगढ़ की तबीयत खराब होने पर उनके पुत्र प्रदीप उन्हें लाए उन्होंने निवेदन किया आ.श्री ने सर्व संर्घ समाज की उपस्थिति में दीक्षा हुई नाम रखा श्रीफल सागर जी महाराज आपने सल्लेखना व्रत बड़े उत्साह पूर्वक पाला तीन महीने चतुर्मास के बाद विहार में भगवाँ में आ.श्री के मुखार बिंद से ओम् नमः सुनते हुई समाधि हुई आप एक उपवास एक अहार करते थे और अहार नीरस लेते थे।

दिनांक 27.10.2022 को चतुर्मास पूर्ण होकर सर्व समाज ने नम आँखों से संघ को बिदाई प्रदान की संघ घुवारा में समवशरण विधान, हटा में सिद्धचक्र विधान तथा खरगापुर में सिद्धचक्र विधान सम्पन्न कराकर पुनः बड़ागाँव में श्री पंचकल्याणक जिनबिम्ब प्रतिष्ठा महोत्सव 21 नवम्बर से 29 नवम्बर तक हुआ, नगर गजरथ फेरी हुई 27 नबम्बर को पिच्छिका परिवर्तन समारोह हुआ।

ॐ नमः सिद्धेभ्य

फलहोड़ी बड़ागाँव का ऐतिहासिक परिचय

सतत सलिल प्रवाहिणी दशार्ण तरंगिणी समीप कोटि पहाड़ पर्वत शृंखला पर प्राकृतिक सौन्दर्य से आच्छादित इस क्षेत्र को किसी आचार्य ने फलहोड़ी किसी आचार्य ने बड़ागाँव तथा किसी ने संयुक्त रूप से ''फलहोड़ी बड़ागाँव'' के नाम से उल्लिखित किया है। जबकि यह एक ही स्थान के नाम है। विन्ध्यांचल पर्वत माला के कोटि पहाड़ से साढ़े तीन कोटि मुनियों के निर्वाण होने के प्रमाण मिलते है। कोटिक मुनियों की निर्वाण स्थली होने के कारण ही यह पर्वत कोटि पहाड़ या कोटिशिला के नाम से जाना जाता है इस सन्दर्भ में कोटिशिला तीर्थ कल्प की गाथा 15 में विस्तृत विवेचन मिलता है। राजस्व और वन विभाग का शासकीय रिकार्ड भी इस तथ्य की पुष्टि करता है (मेप नं.999) यह क्षेत्र इसी पर्वतराज की चोटी शिखर पर स्थित है।

विभिन्न नामों से वर्णित इस तीर्थ क्षेत्र के सम्बन्ध में भारतवर्षीय तीर्थ क्षेत्र कमेटी बम्बई ने सभी तथ्यों का विस्तृत विश्लेषण करने के बाद स्पष्ट किया है कि फलहोड़ी और बड़ागाँव एक ही है भिन्न नहीं (भारत के तीर्थ क्षेत्र भाग-3 पेज 151) जो द्रोणागिरि पर्वत की पश्चिम दिशा में स्थित है जिसे अखिल भारतीय तीर्थ क्षेत्र कमेटी से मान्यता और संवद्धता प्राप्त है। इस तीर्थ क्षेत्र पर गुप्तकाल से लेकर चन्देल कालीन पुरातन अवशेष और ऐतिहासिक प्रमाण आज भी उपलब्ध है। यहाँ पर मिलने वाले पुरातत्व अवशेष इस तथ्य को प्रमाणित करते हैं कि प्राचीन काल से यह तीर्थ क्षेत्र समृद्धशाली जैन संस्कृति का केन्द्र रहा है आगम में भी इस बात के प्रमाण मिलते हैं। आचार्य पद्मनंदि ने जम्बूद्वीप पण्णति नामक ग्रंथ में (तेरसमो

उद्देश्य 165-169) इस तथ्य को उल्लेखित किया है। इस क्षेत्र को बुन्देलखण्ड के तीर्थ क्षेत्रों का केन्द्र बिन्दु या जंक्शन कहा जाना ज्यादा उचित होगा क्योंकि इस क्षेत्र की चारों दिशाओं में 20-25 कि.मी. की दूरी पर सिद्ध क्षेत्र और अतिशय क्षेत्र स्थित है जिनके दर्शनार्थ जाने का मार्ग इसी पावन भूमि से होकर गुजरता है। सिद्ध क्षेत्रों और अतिशय क्षेत्रों से घिरा हुआ यह भूभाग स्वतः ही समृद्धशाली जैन संस्कृति का केन्द्र होने का गौरव प्राप्त कर लेता है। यहाँ पर स्थित चन्देल कालीन भव्य जिनालय चन्देल कालीन शिव मठ, तालाब और यहाँ पर समय-समय खुदाई में मिलने वाले पुरातन अवशेष और शिलालेख इस क्षेत्र की गौरव गाथा अपनी कलाकृतियों के माध्यम से व्यक्त करते है।

भारत वर्षीय तीर्थ क्षेत्र कमेटी ने भी वृहद शोध के आधार पर यह निष्कर्ष दिया है कि द्रोणगिरि (पेज क्र.151) पर्वत के समीप पूर्व दिशा में कोई भी फलहोड़ी या बड़ागाँव नहीं है और न ही इस तथ्य का आगम सम्मत प्रमाण है और न शासकीय रिकार्ड से इस तथ्य की पुष्टि होती है। जबकि द्रोणगिरि पर्वत की पश्चिम दिशा में कोटि पहाड़ पर्वत पर स्थित फलहोड़ी बड़ागाँव आज भी समृद्धशाली जैन-संस्कृति को समेटे हुये अपने मूल स्थान पर स्थित है। निर्वाण कांड की भाषा से यह तथ्य और भी स्पष्ट हो जाता है जिसमें कहा गया है-

फलहोड़ी बड़ग्राम अनूप पश्चिम दिशा द्रोणगिर रूप यानि फलहोड़ी बड़ागाँव द्रोणगिरि पर्वत की पश्चिम दिशा में स्थित है।

मराठी साहित्य के प्राचीनतम लेखकों में भट्टारक गुणकीर्ति का नाम प्रमुखता से आता है उनकी गद्य रचना धर्मामृत परिच्छेद 567 में इस क्षेत्र से आहूट कोटि मुनियों के निवार्ण होने के प्रमाण मिलते हैं। ''फलहोड़ी-ग्राम आहूट कोटि सिद्धासि नमस्कार मांझा।'' (तीर्थ वंदना

संग्रह पेज क्र.51)

कोटिशिला तीर्थ कल्प में आचार्य जिनप्रभसूरि ने पूर्वाचार्यों की जो गाथायें उद्धृत की है उसमें उन्होंने दशार्ण नदी समीप कोटिक मुनियों की निर्वाण स्थली कोटिशिला होने का वर्णन किया है दशार्ण नदी समीप स्थित वर्तमान का कोटि पहाड़ ही कोटिक मुनियों की निर्वाण स्थली है। कोटि पहाड़ या कोटिशिला से भी कोटिक मुनियों के निर्वाण होने के प्रमाण है जो एक दूसरे के पूरक हैं और तमाम भौगोलिक परिस्थितियाँ जो आगम में वर्णित है यहाँ पर स्थित है। (कोटि शिला तीर्थ कल्प गाथा-15)

आचार्य जिनसेन ने आदि पुराण में इस पर्वतराज को कूटाद्रि पर्वत या कूटाचल के नाम से उल्लेखित किया है जो इस पर्वतराज का मिलता हुआ नाम है। संभवतः इस पर्वतराज को कोटिपहाड़, कूटाद्रि, कूटाचल कोटिशिला आदि विभिन्न नामों से पूर्वकाल से जाना जाता रहा है। (आदि पुराण पेज क्र. 68 दूसरा भाग)

उपलब्ध सभी तथ्यों का विस्तृत विश्लेषण करने पर यही निष्कर्ष निकलता है कि दशार्ण नदी (वर्तमान धसान) के समीप चारों ओर सिद्धक्षेत्र और अतिशय क्षेत्रों से घिरे हुये कोटि पहाड़ पर स्थित फलहोड़ी बड़ागाँव कोटिक मुनियों की निर्वाण स्थल है। ऐसी पावन पुनीत पुण्य भूमि को शत्-शत् बार कोटिशः नमन करता हूँ।

सिं. राकेश केशरिया
हटैया मेडीकोज, फलहोड़ी, बड़ागाँव (धासन)
टीकमगढ़ म.प्र. 472010 मो.न-9926891933

फलहोड़ी बड़गाँव क्षेत्र पूजा

आह्वानन

(तर्ज- तेरी छत्रच्छाया)

सिद्धक्षेत्र निर्वाण क्षेत्र ये, तीर्थ क्षेत्र प्यारा।
साढ़े तीन कोटि मुनियों का, ये मुक्ति द्वारा॥
कोटिशिला पर राज रहे, प्रभु! आदिनाथ ध्याऊँ।
फलहोड़ी बड़गाँव क्षेत्र की, जिनपूजा गाऊँ॥

ॐ ह्रीं सिद्धक्षेत्र फलहोड़ी बड़ागाँव सर्व जिन! समाहित आदिनाथ जिन! सार्द्ध तीन कोटि जिना! अत्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठःठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वष्ट सन्निधिकरणम्।

(जल)

बादल आकर जल बरषाते, जिनपूजन करने।
जहाँ बँधे हैं बाँध सरोवर, पूजन जल भरने॥
उन प्रभु चरणों नीर चढ़ाकर, पीर मिटाऊँ मैं।
फलहोड़ी बड़गाँव क्षेत्र की, पूजा गाऊँ मैं॥

ॐ ह्रीं सिद्धक्षेत्र फलहोड़ी बड़ागाँव सर्व जिन! समाहित आदिनाथ जिन! सार्द्ध तीन कोटि जिना! जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं नि. स्वाहा।

(चंदन)

चंदा मामा जहाँ चाँदनी, स्वयं बिछाता है।
दिन में दर्शन न कर पाता, रात में आता है॥
भव आताप मिटाने हेतु, चंदन लाऊँ मैं।
फलहोड़ी बड़गाँव क्षेत्र की, पूजा गाऊँ मैं॥

ॐ ह्रीं सिद्धक्षेत्र फलहोड़ी बड़ागाँव सर्व जिन! समाहित आदिनाथ जिन! सार्द्ध तीन कोटि जिना! भवाताप विनाशनाय चंदनं नि. स्वाहा।

(अक्षत)

तुम अक्षय हो, मैं अक्षय हूँ, फिर अंतर कैसा?

द्रव्य दृष्टि से नाथ! निहारूँ, मैं भी तुम जैसा॥
पर पर्यायी भेद मिटाने, अक्षत लाऊँ मैं।
फलहोड़ी बड़गाँव क्षेत्र की, पूजा गाऊँ मैं॥

ॐ ह्रीं सिद्धक्षेत्र फलहोड़ी बड़ागाँव सर्व जिन! समाहित आदिनाथ जिन! सार्द्ध तीन कोटि जिना! अक्षय पद प्राप्तये अक्षतं नि. स्वाहा।

(पुष्प)

वीतराग दृष्टि के द्वारा, कामदेव जीता।
अतः आपका ध्यान लगाते, राम लखन सीता॥
वीतरागता गुण प्रकटाने, पुष्प चढ़ाऊँ मैं।
फलहोड़ी बड़गाँव क्षेत्र की, पूजा गाऊँ मैं॥

ॐ ह्रीं सिद्धक्षेत्र फलहोड़ी बड़ागाँव सर्व जिन! समाहित आदिनाथ जिन! सार्द्ध तीन कोटि जिना! कामबाण विनाशनाय पुष्पं नि. स्वाहा।

(नैवेद्य)

भक्ति महारस में जो डूबे, स्वर व्यंजन सारे।
छप्पन भोजन थार मनोहर, भर-भर कर प्यारे॥
क्षुधा वेदना रोग मिटाने, चरण चढ़ाऊँ मैं।
फलहोड़ी बड़गाँव क्षेत्र की, पूजा गाऊँ मैं॥

ॐ ह्रीं सिद्धक्षेत्र फलहोड़ी बड़ागाँव सर्व जिन! समाहित आदिनाथ जिन! सार्द्ध तीन कोटि जिना! क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि. स्वाहा।

(दीप)

सूरज किरणें लेके आता, आरतियाँ करने।
चंदा रोज रात में आता, चंद्रकला धरने॥
दीपावलियाँ आज मनाऊँ, आरतियाँ लाऊँ॥
फलहोड़ी बड़गाँव क्षेत्र की, पूजा गाऊँ मैं॥

ॐ ह्रीं सिद्धक्षेत्र फलहोड़ी बड़ागाँव सर्व जिन! समाहित आदिनाथ जिन! सार्द्ध तीन कोटि जिना! मोहांधकार विनाशनाय दीपं नि. स्वाहा।

(धूप)

एक प्रश्न है नाथ हमारा कर्म जले कैसे?
धूप जले संदेशा देती, कर्म जले ऐसे॥
गुण सुगंध से मन भर जाये धूप जलाऊँ मैं।
फलहोड़ी बड़गाँव क्षेत्र की, पूजा गाऊँ मैं॥

ॐ ह्रीं सिद्धक्षेत्र फलहोड़ी बड़ागाँव सर्व जिन! समाहित आदिनाथ जिन! सार्द्ध तीन कोटि जिना! अष्टकर्म दहनाय धूपं नि. स्वाहा।

(फल)

फल पाना तो सभी चाहते, मुनि ज्ञानी ध्यानी।
जिन पूजा ही वह फल देती, शिव फल सुखदानी
सुंदर सरस सुफल भर लाये, थाल चढ़ाऊँ मैं।
फलहोड़ी बड़गाँव क्षेत्र की, पूजा गाऊँ मैं॥

ॐ ह्रीं सिद्धक्षेत्र फलहोड़ी बड़ागाँव सर्व जिन! समाहित आदिनाथ जिन! सार्द्ध तीन कोटि जिना! मोक्षफल प्राप्तये फलं नि. स्वाहा।

(अर्घ)

फलहोड़ी जितने फल देती, और कौन देता?
कोटि शिला साहस बल देती, जो भी नम लेता॥
कोटि-कोटि मुनि मोक्ष पधारे, अर्घ्य चढ़ाऊँ मैं।
फलहोड़ी बड़गाँव क्षेत्र की, पूजा गाऊँ मैं॥

ॐ ह्रीं सिद्धक्षेत्र फलहोड़ी बड़ागाँव सर्व जिन! समाहित आदिनाथ जिन! सार्द्ध तीन कोटि जिना! अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ नि. स्वाहा।

(जयमाला)

दोहा- फलहोड़ी बड़ागाँव में कोटि शिला अभिराम।
सुर नर आ वंदन करें, पूजें लक्ष्मण राम॥

त्रोटक-

बढ़गाँव धसान सु गाँव कहा,
फलहोड़ यही शुभ क्षेत्र रहा।
यह कोटि शिला अति पावन है,
लगता बरसा नित सावन है॥ 1॥

जय कोटि मुनीश्वर मोक्ष गये,
इतिहास प्रमाण बताय रहे।
सब शास्त्र पुराण जु गाय रहे,
हम सादर शीश नवाय रहे॥ 2॥

जिन मोह हरा जिन क्षोभ हरा,
यह पर्वत पूजित मोक्ष धरा।
अनुभूति रसायन हैं इसमें,
निज ध्यान दशा प्रकटे जिसमें॥ 3॥

यह ध्यान धरा, यह ज्ञान धरा,
यह दर्शन बोधि, प्रधान धरा।
तप त्याग यहाँ जिनका निखरा,
उनका गुण वैभव खूब भरा॥ 4॥

बहती नदियाँ अति सुन्दर है,
कहती रहती चल मन्दिर है।
जल बाँध बधाँ, जल ही जल है,
कहता जिन पूजन का फल है॥ 5॥

जल है जिन पूजन तू करले,
भव सागर से भवि तू तरले।

परभाव विभाव सभी तजले,
जिन पूजन में प्रभु को भजले॥ 6॥

बिन कारण कारज होय नहीं,
बिन साधन साध्य सु सोय नहीं।
बिन पूजन पूज्य कहाँ नर हो,
जिन पूजन से निज भाव लखो॥ 7॥

निज सिद्ध स्वरूप निहार यहाँ,
जिन पूजन में शतवार यहाँ।
गुण गीत रचूँ गुणगान करूँ,
यश कीर्तन गा, जयगान करूँ॥ 8॥

अब लौं जितने मुनि सिद्ध भये।
वह भेद कला क्षण ना विसरे।
उपसर्ग सहे समता धरके,
शिवलोक गये ममता हरके॥ 9॥

मुनि धन्य दशा, मुनि धन्य दशा,
उपसर्ग सहा निज में थिरता।
गुण चिन्तन ज्ञान बढ़ाय अरे,
गुण दर्शन ही प्रगटाय अरे॥ 10॥

बरसे बदरा घिरके-भर के,
नभ से बिजुरी चमके-चमके।
निशि हो दिन हो कुछ भेद नहीं,
दुख भी सहते पर खेद नहीं॥ 11॥

मुनि चारित ही जिन चारित है,
जिन चारित ही मुनि चारित है।
लखते जिसमें दिन रैन सदा,
नमलूँ मुनि को, मन हो प्रमुदा॥ 12॥

मन मन्दिर के जिन चन्द्र तुमे,
नमके मिलता सुख कन्द हमें।
अतएव धरूँ निज माथ प्रभो,
लखलूँ निज आतम लक्ष्य विभो॥ 13॥

निजभाव स्वभाव सदा रत हो।
परभाव विभाव नहीं रत हो,
रटना, रटता, रटना, रटता।
जिननाम सदा रटना रटता॥ 14॥

अधिकार किसे मिलता किससे,
श्रम सिद्ध करो भगवान उसे।
भगवान मुझे भगवान मिले,
इतना प्रभु जी वरदान मिले॥ 15॥

तुम सा निज को निज में लखलूँ,
निज आतम स्वाद स्वयं चखलूँ।
जिन पूजन का फल हो इतना,
निज में फलता निज को जितना॥ 16॥

मन मन्दिर के प्रभु से अरजी,
कर दो करूणा करूणा कर जी।
तुम नायक हो सब दायक हो,
हम लायक हो गुण क्षायिक हो॥ 17॥

दोहा- कोटि शिला यह धन्य हैं, सिद्ध शिला का न्यास।
इसी शिला से पा लिया, मुनियों ने शिव वास॥

ॐ ह्रीं सिद्धक्षेत्र फलहोड़ी बड़ागाँव सर्व जिन! समाहित आदिनाथ जिन! सार्द्ध तीन कोटि जिना! जयमाला पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

(पुष्पांजलि)

श्री पद्मप्रभ भगवान

श्रीपद्मप्रभो! के पादपद्म, यह भक्तभ्रमर मन मँडराया।
आनंद कन्द, मकरन्द पिया, निज चिदानंद पा हरषाया॥
हर्षित होकर मन नाच उठा, जिन गुण गुन-गुन गुंजन गाता।
मानो प्रभुवर के चरणों में, वह पूजक बन पूजा गाता॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र! अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घं नि.स्वाहा।

श्री महावीर भगवान

जय महावीर! शासन नायक, क्षायिक ज्ञायक सुखदायक हो।
जय वर्द्धमान भगवान वीर, अतिवीर सुसन्मति लायक हो॥
तुम जिओ और जीने दो शुभ, सन्देशा जग में फैलाया।
धर्म अहिंसा परमो धर्मः यह विश्व शान्ति पथ दर्शाया॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र! अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घं नि.स्वाहा।

श्री चन्द्रप्रभ भगवान

श्री चन्द्रप्रभो का ज्ञान विशद, सम्पूर्ण कलाओं वाला है।
ज्यों शरद पूर्णिमा का चंदा, करता जग में उजियाला है॥
नभ चन्दा तो घटता-बढ़ता, पर चन्द्रप्रभो न घटते हैं।
अतएव भक्त दिन रैन सदा, जय चन्द्रप्रभ की रटते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रभ जिनेन्द्र! अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घं नि.स्वाहा।

श्री महावीर भगवान

कुण्डलपुर का आँगन बोले, उन महावीर की जय जय जय।
विपुलाचल का कण कण बोले, उन महावीर की जय जय जय॥
पावापुर का सरवर बोले, उन महावीर की जय जय जय।
सम्पूर्ण विश्व मिलकर बोले, उन महावीर की जय जय जय॥
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र! अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घं नि.स्वाहा।

श्री पार्श्वनाथ भगवान

समता सुमेरु! क्षमताधारी, हे दया क्षमा के अलंकार।
हे महामना! हे महामुनि!, हे धर्मतीर्थ के तीर्थंकार॥
वामानंदन! काटो बन्धन, जग का वन्दन स्वीकार करो।
हे पार्श्वनाथ! हे कृपानाथ, मुझको भवसागर पार करो॥
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घं नि.स्वाहा।

श्री त्रिमूर्ति भगवान

धन्य-धन्य मैं धन्य भाग्य हूँ, धन्य घड़ी आयी।
सम्यग्दर्शन देने वाली, जिनप्रतिमा पायी॥
रोम-रोम यह नाच रहा है, आज वंदना से।
मेरा जीवन सफल हुआ है, तीर्थ वंदना से॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ, भरत बाहुबली जिनेन्द्र! अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घं नि.स्वाहा।

श्री नेमिनाथ भगवान

ऊर्जयन्त गिरि गिरिनार गिरि, श्री नेमीनाथ निर्वाण गिरि।
जयवन्त रही जयवन्त रहे, यह जिनशासन की प्राण गिरि॥
हम तीर्थ वन्दना करके यह, गिरिनारी सदा बचायेंगे।
इसकी रक्षा में तन मन धन, अर्पण कर अर्घ चढ़ायेंगे॥
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र! अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घं नि.स्वाहा।

श्री आदिनाथ भगवान

हे आदिनाथ! तेरी प्रतिमा, मेरी श्रद्धा को जगा रही।
यह शिवपथ की संदेशक बन, नित मोक्षमार्ग में लगा रही॥
यह वीतरागता परिचायक, ज्ञायक स्वभाव दर्शाती है।
अरु बाल मोहिनी छवि प्यारी, भक्तों का मन हरषाती है॥

दर्शन करते ही, हे प्रभुवर! नयनों में आप समा जाते।
तब भक्त नयन प्रेमाश्रु से, नयनों में तुमकों नहलाते॥
निजशीष बिठा प्रक्षाल करें, फिर हृदय कमल पर पधराते।
तन रोम-रोम रोमांचित हो, नचते गाते पद सिर नाते॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र! अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घं नि.स्वाहा।

24 तीर्थंकर अर्घ

श्री आदिनाथ भगवान

आधि-व्याधि को हरने वाले, आदिनाथ स्वामी।
धर्म तीर्थ को करने वाले, आदिनाथ स्वामी॥
ओं ह्रीं अर्हं आदीश्वराय, नमः निरन्तर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय! अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घं नि.स्वाहा।

श्री अजितनाथ भगवान

चार घातिया कर्म विजेता, अजितनाथ स्वामी।
मोक्षमार्ग के तुम हो नेता, अजितनाथ स्वामी॥
ओं ह्रीं अर्हं अजितेश्वराय, नमः निरन्तर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय! अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घं नि.स्वाहा।

श्री संभवनाथ भगवान

नर भव संभव किया आपने, संयम धर स्वामी।
तीन लोक में शान्ति प्रदाता, संभव जिन स्वामी॥
ओं ह्रीं अर्हं संभव जिनाय, नमः निरन्तर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥
ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय! अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घं नि.स्वाहा।

श्री अभिनंदननाथ भगवान

गुण अभिनंदन, व्रत अभिनंदन, तप अभिनंदन हो।
जिन अभिनंदन! जय अभिनंदन! जप अभिनंदन हो॥
ओं ह्रीं अर्हं अभिनंदनाय, नमः निरन्तर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥
ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय! अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घं नि.स्वाहा।

श्री सुमतिनाथ भगवान

सुमति प्रदाता सुमति जिनेश्वर! सुमरण सदा करूँ।
तुमसी मति हो, तुमसी गति हो, तेरे चरण परूँ॥
ओं ह्रीं अर्हं सुमतिप्रदाय, नमः निरन्तर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय! अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घं नि.स्वाहा।

श्री पद्मप्रभ भगवान

हृदय पद्म को करें प्रफुल्लित, पद्म प्रभो! स्वामी।
पाद पद्म की करें अर्चना, षट्पद शिवगामी॥
ओं ह्रीं अर्हं पद्म-प्रभवे, नमः निरन्तर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय! अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घं नि.स्वाहा।

श्री सुपार्श्वनाथ भगवान

अहो सुपारस! पास खड़ा हूँ, भव का पार्श्व मिले।
भव-भव संचित पाप कर्म सब, तेरे पास गले॥
ओं ह्रीं अर्हं सुपार्श्व मुनये, नमः निरन्तर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय! अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घं नि.स्वाहा।

श्री चन्द्रप्रभ भगवान

चन्द्रप्रभा को मैं ना चाहूँ, चन्द्रप्रभो! चाहूँ।
चन्द्र किरण को मैं ना चाहूँ, चन्द्र चरण चाहूँ॥
ओं ह्रीं अर्हं चन्द्रप्रभवे, नमः निरन्तर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय! अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घं नि.स्वाहा।

श्री सुविधिनाथ भगवान

मोक्षमार्ग की विधि बतलाते, सुविधिनाथ स्वामी।
नवधा विधियाँ हमें सिखादो, सुविधिनाथ स्वामी॥
ओं ह्रीं अर्हं सुविधि प्रदाय, नमः निरन्तर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥
ॐ ह्रीं श्री सुविधिनाथ जिनेन्द्राय! अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घं नि.स्वाहा।

श्री शीतलनाथ भगवान

शीतल चन्दा शीतल चन्दन, शीतलनभ-तारे।
इन सबसे भी तो शीतल हैं, शीतल जिन प्यारे॥
ओं ह्रीं अर्हं शीतल जिनाय, नमः निरन्तर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय! अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घं नि.स्वाहा।

श्री श्रेयांशनाथ भगवान

श्रेय मार्ग के आप विधाता, श्रेयस् पथ दाता।
श्रेय मार्ग दो श्रेय लाभ दो, श्रेयस् गुण गाता॥
ओं ह्रीं अर्हं सदा श्रेय से, नमः निरन्तर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांशनाथ जिनेन्द्राय! अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घं नि.स्वाहा।

श्री वासुपूज्य भगवान

वासुपूज्य को पूज रहा मैं, वसु द्रव्यों द्वारा।
वसु गुण पाने वसुधा पूजे, वासुपूज्य न्यारा॥
ओं ह्रीं अर्हं वासुपूज्याय, नमः निरन्तर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥
ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय! अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घं नि.स्वाहा।

श्री विमलनाथ भगवान

विमल ज्ञान हो विमल ध्यान हो, विमल तपस्या हो।
विमलनाथ का नाम सुमरते, दूर समस्या हो॥
ओं ह्रीं अर्हं विमल जिनाय, नमः निरन्तर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय! अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घं नि.स्वाहा।

श्री अनंतनाथ भगवान

ज्ञान अनंता, दर्श अनंता, सौख्य अनंता है।
वीर्य अनंता, गुण भगवंता, नाम अनंता है॥
ओं ह्रीं अर्हं अनंत ऋषये, नमः निरन्तर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥
ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय! अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घं नि.स्वाहा।

श्री धर्मनाथ भगवान

''चारित्तं खलु धम्मो'' कहकर, धर्म सुनाया है।
साम्य भाव निज में प्रगटाकर, धर्म दिखाया है॥
ओं ह्रीं अर्हं धर्मेश्वराय, नमः निरन्तर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय! अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घं नि.स्वाहा।

श्री शान्तिनाथ भगवान

निज दोषों को शान्त किया तब, परम शान्ति प्रकटी।
शान्ति कला यह तुमसे सीखी, मन की भ्रान्ति मिटी॥
ओं ह्रीं अर्हं शान्तिनाथाय, नमः निरन्तर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय! अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घं नि.स्वाहा।

श्री कुन्थुनाथ भगवान

''दया विशुद्धो धम्मो'' कहकर, दया सिखाई है।
जिओ और जीने दो सबको, राह दिखाई है॥
ओं ह्रीं अर्हं जिनाय कुन्थ्वे, नमः निरन्तर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥
ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय! अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घं नि.स्वाहा।

श्री अरनाथ भगवान

शुभ भावों से शुभ आतम हो, प्रवचन में गाया।
शुद्ध भाव से शुद्धातम हो, तुमने दर्शाया॥
ओं ह्रीं अर्हं अरजिनदेवाय, नमः निरन्तर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥
ॐ ह्रीं श्री अरनाथनाथ जिनेन्द्राय! अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घं नि.स्वाहा।

श्री मल्लिनाथ भगवान

मोहमल्ल के तुम हो जेता, मल्लिनाथ स्वामी।
इष्ट देवता आप हमारे, मल्लिनाथ स्वामी॥
ओं ह्रीं अर्हं मल्लीश्वराय, नमः निरन्तर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥
ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय! अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घं नि.स्वाहा।

श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान

व्रत पालन से सुर पद मिलता, फिर शिवपद मिलता।
मुनिसुव्रत ने यह दरशाया, व्रत का फल फलता॥
ओं ह्रीं अर्हं मुनिसुव्रताय, नमः निरन्तर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥
ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय! अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घं नि.स्वाहा।

श्री नमिनाथ भगवान

नियम मोक्ष का साधन कहते, नमिनाथ स्वामी।
नियम निभाओ, यम अपनाओ, हो शिव पथ गामी॥
ओं ह्रीं अर्हं नमीश्वराय, नमः निरन्तर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय! अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घं नि.स्वाहा।

श्री नेमिनाथ भगवान

नेमिनाथ भगवान हमारे, सदा सहारे हो।
ऊर्जयन्त गिरनार शिखर से, मोक्ष पधारे हो॥
ओं ह्रीं अर्हं नेमिनाथाय, नमः निरन्तर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय! अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घं नि.स्वाहा।

श्री पार्श्वनाथ भगवान

दैवयोग से मिली ऋद्धियाँ, तुम्हें समर्पित हो।
मेरे श्रम की श्रेष्ठ सिद्धियाँ, तुमको अर्पित हों॥
ओं ह्रीं अर्हं पार्श्वजिनाय, नमः निरन्तर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय! अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घं नि.स्वाहा।

श्री महावीर भगवान

महावीर की महादेशना, मंगलकारी हो।
पंचशील मय जीवन शैली, जग हितकारी हो॥
ओं ह्रीं अर्हं महावीराय, नमः निरन्तर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय! अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घं नि.स्वाहा।

चरण चिन्ह

मैनें चरण छुए दो तेरे, तुमने हृदय छुआ।
मेरे आत्म प्रदेशों पर तव, अद्भुत असर हुआ ।।
तेरे गुण मुझमें प्रकटे ज्यों, सर इन्दीवर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो।।
ॐ ह्रीं सिद्धक्षेत्र फलहोड़ी बड़ागाँव सर्व जिन ! सार्द्ध तीन कोटि जिना: अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घं नि.स्वाहा।

गुफा चरण चिन्ह

रत्नत्रय के धारी मुनिगण, जहाँ विचरते हैं।
परम तपस्या के परमाणु, वहाँ बिखरते हैं।।
बिना बनाये तीर्थ बने हैं, आत्म साधना से।
मेरा जीवन सफल हुआ है, तीर्थ वंदना से।।
ॐ ह्रीं सिद्धक्षेत्र फलहोड़ी बड़ागाँव सर्व जिन ! सार्द्ध तीन कोटि जिना: अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घं नि.स्वाहा।

श्री बाहुबली भगवान

विंध्याचल पर ध्यान लगाकर, केवलज्ञान जगाये हो।
अष्टापद से मोक्ष पधारे, सिद्ध प्रभो कहलाये हो।।
अष्टम वसुधा पाने भगवन्! अष्टद्रव्य करता अर्पण।
बाहुबली के चरण कमल में शीष झुकाऊँ करूँ नमन।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय! अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घं नि.स्वाहा।

जयमाला

दोहा - सिद्धक्षेत्र की अर्चना, करूँ भक्ति मनलाय।
जयमाला गाऊँ सदा, वन्दू शीष नवाय।।

चौपाई

सिद्धक्षेत्र की महिमा न्यारी, भव्यों को लगती है प्यारी।
दूर-दूर से यात्री आते, भक्ति भाव से दर्शन पाते।।

दशार्ण नदी के पास ही प्यारा, सिद्धक्षेत्र बड़ागाँव है न्यारा।
फलहोड़ी भी नाम बताते, कोटिशिला भी इसको गाते।।
वर्ष हजार पुराना मंदिर, आदीश्वर भगवान हैं अंदर।
तीर्थंकर चौबीस मनोहर, सिद्धक्षेत्र की बनी धरोहर।।

पर्वत ऊपर बने जिनालय, जिन प्रतिमाओं के त्रय आलय।
उन सबके जो दर्शन पाते, जनम-जनम के पाप नशाते।।
गुफा के अन्दर चरण विराजे, पिच्छी कमण्डलु साथ में साजे।
उन मुनिवर की करूँ वन्दना, भव-भव की हो दूर क्रन्दना।।

संग्रहालय में जो भी जाते, पुरातत्व जिन दर्शन पाते।
संस्कृति सम्मान बताती, जैन धर्म पहिचान बताती।

कण-कण इसका पूजा जाता, सिद्धक्षेत्र का गौरव गाता।

सिद्धक्षेत्र से सिद्धि पाओ, करो वन्दना ध्यान लगाओ।।

दोहा -सिद्धक्षेत्र बड़ागाँव की, पूजन करता आज।

सिद्ध शिला वैभव मिले, नेमिनाथ जिनराज।।

ॐ ह्रीं सिद्धक्षेत्र फलहोड़ी बड़ागाँव सर्व जिन! समाहित आदिनाथ जिन! सार्द्ध तीन कोटि जिन! जयमाला पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

सुने शब्द जो भक्त ने, पूजा रची बनाय।

भक्ति भाव से मन भरा, दर्शन वन्दन पाय।।

इत्याशीर्वाद पुष्पांजलिं क्षिपेत्

प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ स्वामी की आरती

आदिनाथ स्वामी, ओम् जय आदिनाथ स्वामी।
फलहोड़ी बड़ागाँव विराजित, कोटिशिला नामी॥ टेक॥
बुन्देलों की पावन धरती, बिखरी चहुँ शोभा। स्वामी
चरण सरोज धसान पखारे, जग जन मन लोभा॥ ओम् जय......
आषाढ़ वदी द्वितिया, मरुदेवी, माता उर आये। स्वामी
पन्द्रह मास रतन वर्षा कर, सुर गण हर्षाये॥ ओम् जय......
नगर अयोध्या नाभिराय घर, तुमने जनम लिया। स्वामी
जन्म महोत्सव इन्द्र रचाया, ताण्डव नृत्य किया॥ ओम् जय......
नीलांजना नृत्य देख जग, नश्वर जान लिया। स्वामी
लौकांतिक देवों ने आकर, स्तुतिगान किया॥ ओम् जय......
द्वादश दुद्धर तप के द्वारा, केवल ज्ञान मिला। स्वामी
जग को मोक्ष मार्ग बतलाकर, पायी सिद्धशिला॥ ओम् जय......
सिद्धक्षेत्र बड़गाँव की आरती, जो जन भाव करें। स्वामी
वे जन निश्चित स्वल्पभवों में, क्रमशः मोक्ष वरें॥ ओम् जय......
हे आदीश्वर हे 'परमेश्वर' इतनी कृपा करो। स्वामी
रोग शोक न व्यापे भवदिध पार करो॥ ओम् जय......